RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

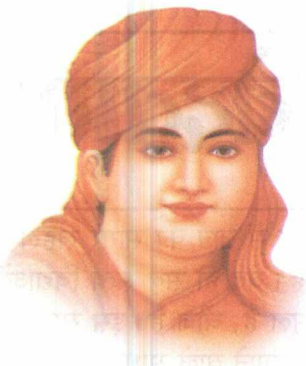

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 21
सृष्टि संवत् 1960853116
23 अगस्त 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726
जालन्धर

वर्ष-72, अंक : 21, 20/23 अगस्त 2015 तदनुसार 7 भाद्रपद सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तुच्छ कामना वाले को अधिकार भ्रष्ट करो

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

य ओहते रक्षसो देववीतावचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात।
यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात्तुच्छ्यान्कामान्करते सिष्विदानः।।

-ऋ० ५।४२।२०

शब्दार्थ-यः-जो **देववीतौ**-देव-प्राप्ति के कार्य में **रक्षसः**-राक्षसों को, दुष्टभावों को, **अनुष्ठान**-विघ्नों को, **ओहते**-लाता है, अथवा **यः**-जो **वः**-तुममें से **शशमानस्य**-निरन्तर शान्ति का अनुष्ठान करने वाले के **शमीम्**-शान्तिकारक कर्म की **निन्दात्**-निन्दा करे और **सिष्विदानः**-निरन्तर स्नेह करने वाले बनकर **तुच्छयान्**-तुच्छ पुरुषों की **कामान**-कामनाओं को **करते**-करता है, हे **मरुतः**-मरुतो! **तम्**-उसको **अचक्रेभि**-चक्रशून्य दण्डों के द्वारा **नि+यात्**-निकाल दो।

व्याख्या-रक्षसः-'राक्षस' का अर्थ है-जिससे अपना बचाव किया जाए, अर्थात जो विघ्न अथवा विघ्नकारी हैं, चाहे वे भाव हों, कर्म हों, मनुष्य हों, कीट-पतंग आदि कोई भी हों, सभी राक्षस हैं। मनुष्य-समाज की रक्षा के लिए जो मरने-मारने को तत्पर हैं, उन्हें 'मरुत् कहते हैं। दूसरे शब्दों में समाज से विघ्नों का नाश करके शान्ति, समता स्थापित रखने वालों को 'मरूत्' कहते हैं।

इस मन्त्र में मरुतों को प्रेरणा की गई है कि वे उस मनुष्य को निकाल बाहर करें कि-

1. य ओहते रक्षसो देववीतौ-जो भगवान् की प्राप्ति के कार्य में, अथवा शुभकार्यों में राक्षसों को लाता है।

शुभकर्म करना, भगवान् की भक्ति करना, ये मनुष्य जन्म की सफलता के साधन हैं। जो मनुष्य इन शुभकर्मों में विघ्न डालना चाहता है, विघ्नकारियों को लाना चाहता है, उसे बाहर कर देना ऐसे राक्षस-सहायक से समाज की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है।

2. यो वः शर्मी शशमानस्य निन्दात्-जो तुममें से शान्तिकारक कर्मों के करने वाले के शान्तिदायक कर्मों की निन्दा करे।

सम्पूर्ण प्राणियों का यत्न सुख-शान्ति प्राप्त करने के लिए हैं। वे वास्तव में धन्य हैं जो मनुष्यों को सुख शान्ति पहुंचाने के साधनों का संविधान करते हैं। मनुष्य समाज के ये महोपकारक वास्तव में समाज का आधार हैं, किन्तु संसार में ऐसे भद्र मनुष्य भी हैं जिन्हें दूसरों की सुख-शान्ति देखकर ईर्ष्या और मत्सर घेर लेते हैं। वे उनकी प्रशंसा को सुन नहीं सकते, सहन नहीं कर सकते। वे स्वयं चूंकि भले कार्य करके प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकते, अतः जलन के मारे वे ऐसे शुभकर्मा लोगों के कर्मों की निन्दा करते रहते हैं और इस प्रकार अपने हृदय की जलन बुझाना चाहते हैं, जो उल्टा और बढ़ जाती है। ऐसे निन्दक, शान्ति भंग करने वालों को भी समाज से बाहर कर देना चाहिए। और-

3. तुच्छ्यान् कामान् करते सिष्विदानः-जो बार-बार प्रेम करता हुआ तुच्छों की कामनाएं करता है।

खाना-पीना, भोग आदि तो पशुओं में भी है। मनुष्य तन पाकर भी यदि ऐसी ही हीन कामनाओं के चक्कर में मनुष्य पड़ा रहा तो वह मनुष्य कैसा ? उसे तो भगवान् भी मनुष्य-शरीर न देंगे। ऐसे ही हीन भावों वाले लोग मनुष्य-समाज में हीन भावों का प्रचार करके मनुष्य समाज के पतन का कारण बनते हैं। ऐसों से मनुष्य-समाज की हर प्रकार रक्षा करनी चाहिए ये लोग राक्षस हैं।

'समानशीलव्यसनेषु सख्यम्' जिनका स्वभाव एक-सा है अथवा जिन पर एक-जैसी विपत्ति हो, वे मित्र बन जाते हैं। इसी नीतिवाक्य के अनुसार जो किसी कार्य में विघ्नकारियों-राक्षसों की सहायता करता है, वह भी राक्षस ही है।

इस दृष्टि से मन्त्र पर विचार किया जाए तो राक्षसों का स्वरूप स्पष्ट रूप में आ जाता है। किसी भी कार्य में विघ्न करने वाला पदार्थ राक्षस है, चाहे वह चेतन हो अथवा अवचेतन।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

वेदवाणी से प्रकृष्ट चेतना मिलती है

-ले० अशोक आर्य, 104 शिप्रा अपार्टमैंट्स, कौशाम्बी गाजियाबाद

वेद में ज्ञान का सागर लहलहा रहा है। वेद ही सब सत्य विद्याओं का मूल है, बीज है। इस सागर में गोता लगाने वाले साधक को अपने प्रकाश से यह वेद ही उसके हृदय में विपुल ज्ञान का प्रकाश फैला देती है। इस तथ्य को इस सूक्त का यह अन्तिम मन्त्र बड़े ही सुन्दर ढंग से इस प्रकार उपदेश कर रहा है-

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम।
मा नो अति ख्य आ गहि।।
-ऋग्वेद १.३.१२

प्रभु के दिए वेद ज्ञान के माध्यम से जो उपदेश इस सूक्त के विगत मन्त्रों में दिए गए हैं, उन सब आवेशों का पालन करने के योग्य बनाने के लिए शान्ति की याचना करता हुआ, शान्ति की प्रार्थना करता हुआ जीव उस प्रभु से इस मन्त्र में तीन बातों पर विचार करते हुए इस प्रकार प्रार्थना कर रहा है कि

1. जिस सोम को हम ने सब शक्तियों का, सब मतियों का आधार माना है, उस सोम का पान करने वाले, उस सोम की रक्षा करने वाले, उस सोम को अपने शरीर में स्थान देने वाले, धारण करने वाले हम साधक लोग, हे प्रभु! आप के समीप रहने वाले, आपके समीप बैठने वाले, सदा आप के समीप वर्तमान होने वाले बनें। भाव यह है कि हे प्रभु! आप हमारे हृदयों में विराजमान होने के कारण, आप हमारे इस शरीर का अंग होने के कारण हमें समय-समय पर उत्तम ज्ञान व मार्गदर्शन करते रहते हो। हमारे समीप जितनी भी उत्तम मतियां विद्यमान हैं, हमारे समीप जितने भी उत्तम ज्ञान के स्रोत विद्यमान हैं, हमारे समीप जितना भी ज्ञान का भण्डार विद्यमान है, उन सब प्रकार के ज्ञानों का, उन सब प्रकार के उत्तम विचारों का हम ज्ञान प्राप्त करें। इस प्रकार के जितने भी ज्ञान या विचार हमारे आस-पास हैं, उन्हें हम ग्रहण करें, आत्मसात करें।

हमारे हृदय में जो आपने ज्ञान का प्रकाश दिया है, जो ज्ञान की ज्योति दी है, उसे हम देखें, उसका हम साक्षात्कार करें। इतना ही नहीं आप ने हमारे अन्दर जो ज्ञान का प्रकाश दिया है अथवा आपके ज्ञान का जो प्रकाश हमारे अन्दर विद्यमान है, उसे हम पूर्णतया अपना बनाने के लिए, उसे हम आत्मसात करने के लिए अथवा उसे हम प्राप्त करने के लिए सदा ही यत्न करें, प्रयत्न करें, ऐसा हमारा प्रयास सदा ही रहे। मन्त्र के इस भाव को पूर्व मन्त्र में भी प्रकट किया गया था। वहां योग्य करने, सोमपान करने व दानशील बनने की प्रेरणा इस तथ्य की ओर ही तो संकेत कर रही थी।

जब हम यज्ञशील बन सब प्रकार के यज्ञों के माध्यम से परोपकार करेंगे, जब हम यह निर्णय ले लेंगे कि हमने अपने अन्दर वीर्य की, अपने अन्दर सोम की, अपने अन्दर की शक्ति का संचय करना है, रक्षा करना है, संग्रह करना है और इसके लिए संयम का जीवन व्यतीत करना है, संयमी वृत्ति वाले बनना है, बनना ही नहीं है अपितु संयमी बन जाएंगे तथा यज्ञ वृत्ति को अपने जीवन का अंग बना कर, यज्ञ वृत्ति को अपने जीवन का भाग बना कर, इसे अपने जीवन में अपना कर चलेंगे तो निश्चित ही हम सब प्रकार के लोभ से, सब प्रकार के लालच से, सब प्रकार के मोह से ऊपर उठेंगे। जब हम ऐसा करने में सफल हो जाएंगे तो निश्चय ही हमारे अन्दर जो आपका प्रकाश स्थित है, हे प्रभु! आपके इस ज्ञान के प्रकाश को हम निश्चित ही अपने अन्दर देख सकेंगे।

2. हे प्रभु! जब आप हमारे मध्य में आकर ज्ञान का प्रकाश रूपी प्रसाद बांट रहे हों तो ऐसी अवस्था कभी न आए कि इस प्रसाद को बांटते समय आप कहीं हमें दृष्टि विगत कर आगे ही निकल जाएं, आप हमें छोड़ कर, इस प्रसाद से वंचित कर आगे निकल जाएं। यह प्रसाद केवल दूसरों को ही बांट दें तथा हम इस ज्ञान के प्रकाश को पाने से रह ही जावें, ऐसा कभी न हो। हमारा इस प्रकार का उलाहना देने को आप अन्यथा न लेना, यहां हमारा यह कहने का तात्पर्य है कि आप हमें अपने ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करने वालों के लिए अयोग्य मान कर हमें छोड़ मत देना अपितु हमें इसके योग्य बनाए रखना। इस प्रकार हम सदा ही आपका ज्ञान प्राप्त करते हैं।

3. मन्त्र में जो तीसरा उपदेश किया गया है, उसके माध्यम से कहा गया है कि हे प्रभो! आप तथा आपका दिया हुआ ज्ञान हमें अवश्य ही मिले। ज्ञान को प्राप्त करना हमारा अधिकार है, इसलिए हम इस ज्ञान को प्राप्त करने की अभिलाषा सदा अपने अन्दर संजोकर इसे पाने का यत्न करते रहेंगे, इसे पाने की कामना, इच्छा करते रहेंगे। ज्ञान पाने की अभिलाषा तो हम सदा करते ही रहेंगे। ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक हम सदा ही बनें रहेंगे। जब हम जीवन में ऐसा प्रयत्न करते रहेंगे तो निश्चित ही आपको पाने का, आप के दर्शन का, आपको मिलने का, आपसे सम्पर्क का सुलभता का अवसर हमारे लिए बना रहेगा। हम प्रभु से मिलने का यत्न क्यों करते हैं, किस कार्य के लिए करते हैं ? वह प्रभु हमारे आचार्य होंगे, मैं या हम उस प्रभु के शिष्य होंगे, विद्यार्थी होंगे। जब प्रभु हमारे शिक्षक होंगे, हमारे गुरु होंगे, हमारे आचार्य होंगे तथा हम उस महान प्रभु के आज्ञाकारी शिष्य होंगे, तब ही हमें उत्तम मतियों का, सुमतियों का, अच्छी मतियों का लाभ मिल सकेगा, प्राप्त हो सकेगा। ऐसी अवस्था में हम प्रभु द्वारा दिए जाने वाले ज्ञान रूपी प्रसाद से कभी रहित न होंगे, कभी छूट न सकेंगे, कभी वंचित न होंगे।

आर्य समाज बरनाला का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला का वार्षिक चुनाव दिनांक 2.8.15 को आर्य समाज बरनाला की साधारण सभा में सम्पन्न हुआ। डा. सूर्यकान्त शोरी को वर्ष 2015-16 के लिए पांचवीं बार प्रधान पद के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया।

साप्ताहिक सत्संग के तुरन्त बाद आर्य समाज बरनाला में वर्ष 2015-16 के लिए साधारण सभा में चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न हुई। सभा की अध्यक्षता श्री भारत भूषण मैनन, सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री हरमेल सिंह जोशी सीनियर, सदस्य ने संयुक्त रूप में की। मंत्री तिलक राम ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। वर्ष 2014-15 के अंतिम प्रधानगी भाषण में डा. सूर्यकान्त शोरी ने सभी आर्य सदस्यों का धन्यवाद किया।

वर्ष 2015-16 के लिए प्रधान पद हेतु श्री संजीव शोरी, श्री भारत मोदी, श्री केवल जिन्दल एवं श्री राजेश गांधी ने डा. सूर्यकान्त शोरी का नाम प्रस्तुत किया। उपस्थित सभासदों ने गतवर्षों में उनके कार्य एवं व्यवहार की प्रशंसा करते हुए करतल ध्वनि से सर्वसम्मति से समर्थन प्रदान किया और कार्यकारिणी के गठन का अधिकार भी दे दिया गया। श्री हरमेल सिंह जोशी ने सभी उपस्थित सभासदों का धन्यवाद किया तथा समुचित सूझ-बूझ के लिए प्रशंसा की। साधारण सभा की मीटिंग में श्री सूरज मान, श्री शिव कुमार बत्ता, श्री राजेश गांधी, श्री राम कुमार सोबती, श्री राम चन्द्र आर्य, श्री ओम प्रकाश सिन्धवानी, श्री सुखविन्द्र लाल मारकण्डा, श्री बसन्त गोयल, श्री देवेन्द्र कुमार चड्डा, श्री चन्द्र वर्मा, श्री विजय आर्य, श्री राजीव बरनाला व अन्य सभासद उपस्थित थे।

आर्य समाज बरनाला की वर्ष 2015-16 के लिए नव गठित कार्यकारिणी सदस्य-1. डॉ. सूर्यकान्त शोरी-प्रधान, 2. श्री हरमेल सिंह जोशी-उप-प्रधान, 3. श्री भारत भूषण मैनन-उप-प्रधान, 4. तिलक राम-मंत्री, 5. श्री सुखविन्द्र लाल मारकण्डा-कोषाध्यक्ष, 6. श्री राम चन्द्र आर्य (अधि. आ. वीरदल)-पुस्कालयाध्यक्ष, 7. श्री बसन्त कुमार शोरी-वेद प्रचार मंत्री, 8. श्री केवल जिन्दल-अंतरंग सदस्य, 9. श्री भारत मोदी-अंतरंग सदस्य, 10. श्री राजेश गांधी-अंतरंग सदस्य, 11. श्री शिव कुमार बत्ता-अंतरंग सदस्य, 12. श्री राम कुमार सोबती-अंतरंग सदस्य, 13. श्री सूरज मान गर्ग-अंतरंग सदस्य, 14. श्री विजय आर्य-अंतरंग सदस्य।

-तिलक राम

सम्पादकीय.....

स्वतन्त्रता दिवस मनाना कब सार्थक होगा ?

15 अगस्त 1947 को हमारा देश कई वर्षों की गुलामी के पश्चात आजाद हुआ था तब से हम इस दिन आजादी दिवस के रूप में मनाते हैं। प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त का दिन बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष भी हमारे देश में आजादी दिवस को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दिन लोग देशभक्ति के गीत गाते हैं, नेताओं के भाषण सुनते हैं, पूरे उत्साह और उमंग के साथ इस दिन को मनाते हैं। परन्तु सोचने का विषय यह है कि क्या केवल हमें आजादी दिवस मना लेने से संतोष कर लेना चाहिए? क्या केवल इस को मनाकर पूरे साल हम देश के लिए कुछ न करें? क्या यही आजादी का वास्तविक स्वरूप है? क्या यही दिन देखने के लिए हमारे देशभक्त वीरों ने अपना बलिदान दिया था? क्या वे आजाद भारत में इसी दिन को देखना चाहते थे? क्या हम आजाद देश के नागरिक अपने कर्त्तव्य का सही पालन कर रहे हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर इस समय मिलना कठिन है क्योंकि हम गोरे अंग्रेजों की गुलामी से तो मुक्त हो गए हैं परन्तु काले अंग्रेजों से जिन्होंने हमारे देश को जड़ से खोखला कर दिया है उनसे कब मुक्त होंगे? जब तक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से निर्वहन नहीं करता, भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं होता, राष्ट्र के प्रति उसके जो कर्त्तव्य है उनका सही तरह से पालन नहीं करता तब तक उसे आजादी दिवस मनाने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसे नेताओं को भी तिरंगा फहराने का कोई अधिकार नहीं है जो भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

जब तक हम अपने देश के प्राचीन गौरव को नहीं प्राप्त कर लेते, जब तक हमारा देश फिर से सोने की चिड़िया नहीं बन जाता, जब तक इस देश से भ्रष्टाचार, नशा, रिश्वतखोरी समाप्त नहीं हो जाती तब तक हम पूर्ण रूप से आजाद नहीं होंगे। एक समय था जब यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था। इस देश की गौरवगाथा चारों दिशाओं में गाई जाती थी। हमारे देश में लोग चरित्र की शिक्षा लेने आते थे। राजा अश्वपति बड़े गर्व के साथ घोषणा करते थे-

नमे स्तेनो जनपदे न कदर्य न मद्यपः।
ना नाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् मेरे देश में कोई चोर नहीं है, कोई शराबी नहीं है, कोई भी व्यक्ति जुआ नहीं खेलता है। ऐसा कोई घर नहीं हैं जहां पर यज्ञ न होता हो। कोई भी मनुष्य अविद्वान् और मूर्ख नहीं है। व्यभिचारी पुरूष ही नहीं है तो स्त्रियां कहां से होंगी। इस प्रकार हमारे देश में बाहर से आकर लोग शान्ति प्राप्त करते थे। हमारे देश में दूध और घी की नदियां बहती थी परन्तु आज इस देश में शराब की नदियां बहती हैं और उसमें हमारे देश की युवा शक्ति बह रही है। अगर समय रहते इस समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो इस देश की युवा शक्ति नशे के प्रवाह में बहकर अपना भविष्य बर्बाद कर देगी। क्या इसलिए हमारे देश के वीरों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों का त्याग किया और फांसी के फन्दे पर झूल गए थे।

आज हमारा देश अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। देश की समस्याओं का समाधान मिलकर करना हमारा कर्त्तव्य है। इस देश का नागरिक होने के नाते हमें अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। सबसे बड़ी चिन्ता इस देश में नेताओं के व्यवहार और रवैये से है। इस मानसून सत्र में लोकसभा और राज्यसभा में सांसदों ने जिस प्रकार का व्यवहार किया, जिस प्रकार संसद को बंधक बनाए रखा, उसके लिए इस देश की जनता उन्हें माफ नहीं करेगी। क्या इस प्रकार के आचरण को देखकर लगता है कि हम पूर्ण रूप से आजाद हो गए हैं? क्या ऐसे लोगों को स्वतन्त्रता दिवस मनाने का अधिकार है? क्या मुट्ठी भर नेताओं को देश के विकास में बाधक बनना चाहिए? क्या इसके लिए जिम्मेदार लोगों को माफ किया जाना चाहिए। इस प्रश्नों का उत्तर है नहीं। ऐसे नेताओं को कोई अधिकार नहीं है कि वे तिरंगे का अपमान करें। इस जघन्य कृत्य के लिए उन्हें कभी माफ नहीं किया जाना चाहिए। इस मानसून सत्र में करोड़ों रूपये बर्बाद हो गए परन्तु विपक्ष ने कोई भी देश हित का काम नहीं करने दिया। क्योंकि उनका तो एक ही नारा है- न हमने कुछ किया है और न किसी को करने देंगे। कांग्रेस पार्टी का लक्ष्य है कि किसी भी प्रकार से माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी को रोकना है। क्योंकि वे जानते हैं कि जो काम उन्होंने मुख्यमन्त्री रहते हुए गुजरात के लिए किया है अगर वे ऐसे ही कार्य देश के लिए कर गए तो उनके लिए सत्ता एकमात्र स्वप्न रह जाएगी। इसलिए जिस किसी प्रकार से वे केवल प्रधानमन्त्री की छवि को खराब करना चाहते हैं। महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल आदि नेताओं के नाम की रोटियां खाने वाली कांग्रेस पार्टी को सोचना चाहिए कि सत्ता में न रहते हुए भी उनके कुछ कर्त्तव्य हैं। सत्ता से बाहर होने के सदमे से कांग्रेस पार्टी के लोगों को उबरना चाहिए। संसद में शोर मचाने से उन्हें कोई लाभ नहीं होगा। जनता द्वारा दिए गए जनादेश का उन्हें सम्मान करना चाहिए।

15 अगस्त को राष्ट्रीय पर्व मनाना तभी सार्थक हो सकता है जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक, चाहे वह सांसद हो, एम.एल. हो, उच्च अधिकारी हो या फिर देश का साधारण नागरिक, सभी यह शपथ लें कि हम भ्रष्टाचार नहीं करेंगे, रिश्वत नहीं लेंगे, राष्ट्र के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे, देश की समस्याओं का सभी मिलकर समधान करेंगे, देश के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करेंगे, इस देश को नशामुक्त बनाएंगे, लोकतन्त्र की मर्यादाओं का पालन करेंगे। इस प्रकार का संकल्प लेकर अगर हम आजादी दिवस को मनाएंगे तो आजादी दिवस मनाना सार्थक होगा।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

प्रश्नोत्तरी पुनर्जन्म विषय

-ले० श्री सुमित टण्डन, लुधियाना

प्रश्न 1. पुनर्जन्म किसको कहते हैं ?

उत्तर-जब जीवात्मा एक शरीर का त्याग करके किसी दूसरे शरीर में जाती है तो इस बार-बार जन्म लेने की क्रिया को पुनर्जन्म कहते हैं।

प्रश्न 2. पुनर्जन्म क्यों होता है?

उत्तर-जब एक जन्म के अच्छे बुरे कर्मों के फल अधूरे रह जाते हैं तो उनको भोगने के लिए दूसरे जन्म आवश्यक हैं।

प्रश्न 3. अच्छे बुरे कर्मों का फल एक ही जन्म में क्यों नहीं मिल जाता ? एक में ही सब निपट जाए तो कितना अच्छा हो ?

उत्तर-नहीं जब एक जन्म में कर्मों का फल शेष रह जाए तो उसे भोगने के लिए दूसरे जन्म अपेक्षित होते हैं।

प्रश्न 4. पुनर्जन्म को कैसे समझा जा सकता है ?

उत्तर-पुनर्जन्म को समझने के लिए जीवन और मृत्यु को समझना आवश्यक है।

प्रश्न 5. शरीर के बारे में समझाएं।

उत्तर-हमारे शरीर का निर्माण प्रकृति से हुआ है।

जिसमें मूल प्रकृति (सत्व रजस और तमस) से प्रथम बुद्धि तत्व का निर्माण हुआ है।

बुद्धि से अहंकार (बुद्धि का आभामण्डल)।

अहंकार से पांच ज्ञानेन्द्रियां (चक्षु, जिह्वा, नासिका, त्वचा, श्रोत्र), मन।

पांच कर्मेन्द्रियां (हस्त, पाद, उपस्थ, पायु, वाक्)।

शरीर की रचना को दो भागों में बांटा जाता है (सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर)।

प्रश्न 6. सूक्ष्म शरीर किसको बोलते हैं ?

उत्तर-सूक्ष्म शरीर में बुद्धि, अहंकार, मन, ज्ञानेन्द्रियां। ये सूक्ष्म शरीर आत्मा को सृष्टि के आरम्भ में जो मिलता है वही एक ही सूक्ष्म शरीर सृष्टि के अंत तक उस आत्मा के साथ पूरे एक सृष्टि काल (4320000000 वर्ष) तक चलता है और यदि बीच में ही किसी जन्म में कहीं आत्मा का मोक्ष हो जाए तो ये सूक्ष्म शरीर का मोक्ष हो जाए तो ये सूक्ष्म शरीर भी प्रकृति में वहीं लीन हो जाएगा।

प्रश्न 7. स्थूल शरीर किसको कहते हैं?

उत्तर-पंच कर्मेन्द्रियां (हस्त, पाद, उपस्थ, पायु, वाक्) ये समस्त पंचभौतिक बाहरी शरीर।

प्रश्न 8. जन्म क्या होता है ?

उत्तर-जीवात्मा का अपने करणों (सूक्ष्म शरीर) के साथ किसी पंचभौतिक शरीर में आ जाना ही जन्म कहलाता है।

प्रश्न 9. मृत्यु क्या होती है ?

उत्तर-जब जीवात्मा का अपने पंचभौतिक स्थूल शरीर से वियोग हो जाता है, तो उसे ही मृत्यु कहा जाता है। परन्तु मृत्यु केवल स्थूल शरीर की होती है, सूक्ष्म शरीर की नहीं। सूक्ष्म शरीर भी छूट गया तो वह मोक्ष कहलाएगा मृत्यु नहीं। मृत्यु केवल शरीर बदलने की प्रक्रिया है, जैसे मनुष्य कपड़े बदलता है। वैसे ही आत्मा शरीर भी बदलता है।

प्रश्न 10. मृत्यु होती ही क्यों है?

उत्तर-जैसे किसी एक वस्तु का निरन्तर प्रयोग करते रहने से उस वस्तु का सामर्थ्य घट जाता है और उस वस्तु को बदलना आवश्यक हो जाता है, ठीक वैसे ही एक शरीर का सामर्थ्य भी घट जाता है और इन्द्रियां निर्बल हो जाती हैं। जिस कारण उस शरीर को बदलने की प्रक्रिया का नाम ही मृत्यु है।

प्रश्न 11. मृत्यु न होती तो क्या होता ?

उत्तर-तो बहुत अव्यवस्था होती। पृथ्वी की जनसंख्या बहुत बढ़ जाती और यहां पैर धरने का भी स्थान न होता।

प्रश्न 12. क्या मृत्यु होना बुरी बात है ?

उत्तर-नहीं, मृत्यु होना कोई बुरी बात नहीं ये तो एक प्रक्रिया है शरीर परिवर्तन की।

प्रश्न 13. यदि मृत्यु होना बुरी नहीं है तो लोग इससे इतना डरते क्यों हैं ?

उत्तर-क्योंकि उनको मृत्यु के वैज्ञानिक स्वरूप की जानकारी नहीं हैं। वे अज्ञानी हैं। वे समझते हैं कि मृत्यु के समय बहुत कष्ट होता है। जिन्होंने वेद, उपनिषद या दर्शन को कभी पढ़ा नहीं वे ही अंधकार में पड़ते हैं और मृत्यु से पहले कई बार मरते हैं।

प्रश्न 14. तो मृत्यु के समय कैसा लगता है ? थोड़ा सा तो बताएं।

उत्तर-जब आप बिस्तर में लेटे-लेटे नींद में जाने लगते हैं तो आपको कैसा लगता है ? ठीक वैसा ही मृत्यु की अवस्था में जाने में लगता है उसके बाद कुछ अनुभव नहीं होता। जब आपकी मृत्यु किसी हादसे से होती है तो उस समय आपको मूर्च्छा आने लगती है, आप ज्ञान शून्य होने लगते हैं जिससे कि आपको कोई पीड़ा न हो। तो यही ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा है कि मृत्यु के समय मनुष्य ज्ञान शून्य होने लगता है और सुषुप्तावस्था में जाने लगता है।

प्रश्न 15. मृत्यु के डर को दूर करने के लिए क्या करें ?

उत्तर-जब आप वैदिक आर्ष ग्रन्थ (उपनिषद, दर्शन आदि) का गम्भीरता से अध्ययन करके जीवन, मृत्यु, शरीर आदि के विज्ञान को जानेंगे तो आपके अन्दर का, मृत्यु के प्रति भय मिटता चला जाएगा और दूसरा ये की योग मार्ग पर चलें तो स्वयं ही आपका अज्ञान कमतर होता जाएगा और मृत्यु भय दूर हो जाएगा। आप निडर हो जाएंगे। जैसे हमारे बलिदानियों की गाथाएं आपने सुनी होंगी जो राष्ट्र की रक्षा के लिए बलिदान हो गए तो आपको क्या लगता है कि क्या वो ऐसे ही एक दिन में बलिदान देने को तैयार हो गए थे ? नहीं उन्होंने भी योगदर्शन, गीता, सांख्य, उपनिषद, वेद आदि पढ़कर ही निर्भयता को प्राप्त किया है। योग मार्ग को जिया था, अज्ञानता का नाश किया था। महाभारत के युद्ध में भी जब अर्जुन, भीष्म, द्रोणादिकों की मृत्यु से भय से युद्ध की मंशा को त्याग बैठा था तो योगेश्वर कृष्ण ने भी तो अर्जुन को इसी सांख्य, योग, निष्काम कर्मों के सिद्धान्त के माध्यम से जीवन मृत्यु का ही तो रहस्य समझाया था और यह बताया कि शरीर तो मरणधर्मा है ही तो उसी शरीर विज्ञान को जानकर ही अर्जुन भयमुक्त हुआ तो इसी कारण वेदादि ग्रन्थों का स्वाध्याय करने वाले मनुष्य ही राष्ट्र के लिए अपना शीश कटा सकता है, वह मृत्यु से भयभीत नहीं होता, प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु को आलिंगन करता है।

प्रश्न 16. किन-किन कारणों से पुनर्जन्म होता है ?

उत्तर-आत्मा का स्वभाव है कर्म करना, किसी भी क्षण आत्मा कर्म किए बिना रह ही नहीं सकता। वे कर्म अच्छे करे या फिर बुरे, ये उस पर निर्भर है, पर कर्म करेगा अवश्य। तो ये कर्मों के कारण ही आत्मा का पुनर्जन्म होता है। पुनर्जन्म के लिए आत्मा सर्वथा ईश्वराधीन है।

प्रश्न 17. पुनर्जन्म कब-कब नहीं होता ?

उत्तर-जब आत्मा का मोक्ष हो जाता है तब पुनर्जन्म नहीं होता है।

प्रश्न 18. मोक्ष होने पर पुनर्जन्म क्यों नहीं होता ?

उत्तर-क्योंकि मोक्ष होने पर स्थूल शरीर तो पंचतत्वों में लीन हो ही जाता है, पर सूक्ष्म शरीर जो आत्मा से सबसे निकट होता है, वह भी अपने मूल कारण प्रकृति में लीन हो जाता है।

प्रश्न 19. मोक्ष के बाद क्या कभी भी आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता ?

उत्तर-मोक्ष की अवधि तक आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता। उसके बाद होता है।

प्रश्न 20. लेकिन मोक्ष तो सदा के लिए होता है, तो फिर मोक्ष की एक निश्चित अवधि कैसे हो सकती है ?

उत्तर-सीमित कर्मों का कभी असीमित फल नहीं होता। यौगिक दिव्य कर्मों का फल हमें ईश्वरीय आनन्द के रूप में मिलता है, और जब ये मोक्ष की अवधि समाप्त होती है तो दोबारा से ये आत्मा शरीर धारण करती है।

प्रश्न 21. मोक्ष की अवधि कब तक होती है ?

उत्तर-मोक्ष का समय 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष है, जब तक आत्मा मुक्त अवस्था में रहती है।

प्रश्न 22. मोक्ष की अवस्था में स्थूल शरीर या सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है या नहीं ?

उत्तर-नहीं मोक्ष की अवस्था में आत्मा पूरे ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाता रहता है और ईश्वर के आनन्द में रहता है, बिल्कुल ठीक वैसे ही जैसे कि मछली पूरे समुद्र में रहती है और जीव को किसी भी शरीर की आवश्यकता ही नहीं होती।

प्रश्न 23. मोक्ष के बाद आत्मा को शरीर कैसे प्राप्त होता है ?

उत्तर-सबसे पहला तो आत्मा को कल्प के आरम्भ (सृष्टि आरम्भ) में सूक्ष्म शरीर मिलता है फिर ईश्वरीय मार्ग और औषधियां की सहायता से प्रथम रूप में अमैथुनी जीव शरीर मिलता है, वो शरीर सर्वश्रेष्ठ मनुष्य या विद्वान का होता है जो कि मोक्ष रूपी पुण्य को भोगने के बाद आत्मा को मिला है। जैसे इस वाली सृष्टि के आरम्भ में चारों ऋषि विद्वान् (वायु, आदित्य, अग्नि, अंगिरा) को मिला जिनके वेद के ज्ञान से ईश्वर ने अलंकारित किया क्योंकि ये ही वो पुण्य आत्माएं थीं जो मोक्ष की अवधि पूरी करके आई थीं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

भक्त की पुकार

-ले० यश शर्मा मन्त्री आर्य समाज यमुनानगर

ओ३म शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शंयोरभिस्त्रवन्तु न:।

यजु० अ० 36. मं० 12

एक भक्त प्रभु से कहता है कि आप सबके प्रकाशक, मनोवांछित आनन्द व पूर्णानन्द की प्राप्ति करवाते हो व सुखों की वर्षा करते हो परन्तु हे भगवान, आपने मुझे इस संसार में भेज तो दिया है, लेकिन यह तो तीव्र वेगमान पथरीली नदियों के समान है। यह संसार तो छल-कपट, राग-द्वेष से भरा पड़ा है। जब हम धर्म के कार्य करते हैं तो हमें सुख मिल जाता है और हमें सुख से राग हो जाता है। तब हम रागवश सदा सुख की चाहना करते हैं। जब हम अधर्म के कार्य करते हैं तो हमें दु:ख मिलता है। तब हम दु:ख से द्वेष करते हैं और कह उठते हैं कि प्रभु हमें दु:ख न देना। इस प्रकार हम संसार में छ: धुरों वाले चक्र में, यानि धर्म-सुख-राग और अधर्म-दुख-द्वेष में फंसे हुए हैं। गीता में श्री कृष्ण जी उपदेश करते हैं कि न राग करो न द्वेष करो। हे प्रभो, मुझे तो कोई रास्ता, इस संसार सागर से तर जाने का नज़र नहीं आता।

मानव कर्म करता रहता है, कुछ अच्छे कर्म करता है और कुछ बुरे कर्म भी जाने-अनजाने में करता है। प्रभु हमारे हर कर्म को देख रहा होता है चाहे हम छिप कर भी क्यों न करें। वो हमारे कर्मों का हिसाब लगाता रहता है। जितने अच्छे कर्म उतना अच्छा फल, जितने बुरे कर्म उतना बुरा फल। प्रभु अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार समय आने पर फल देता है। हम कई बार कह उठते हैं कि हमने कर्म तो बहुत किया, परन्तु फल थोड़ा मिला अथवा नहीं मिला। क्या हमने कभी सोचा कि जब हमने अभी कोई कर्म किया ही नहीं तो हमें इतने अच्छे घर में जन्म कैसे मिल गया। यह प्रभु की न्याय व्यवस्था का ही परिणाम है। यह प्रभु को ही ज्ञात है कि किस कर्म का कितना फल किस समय देना है व कितना रिजर्व रख कर फिर कब देना है। हमारे कर्मों से ही हमारा प्रारब्ध बनता है व संस्कार बनकर उभरता है व सुख-दु:ख रूप में सामने आ जाता है।

हे मानव, तू इस संसार में आकर दु:ख पा रहा है। इस संसार में तुझे भेजने से पहले मैंने इस संसार में वेद ज्ञान रूपी अमृत सबसे पहले तेरे लिए भेजा। इस अमृत को तू पी और अपने अज्ञान को दूर कर व अपने मन के मैल को दूर कर ले, अपना अन्त:करण शुद्ध कर ले। सत्संग कर, स्वाध्याय कर, सेवा कर, अच्छे-अच्छे कर्म करता हुआ पुण्य का बीज बो ले और प्रभु की भक्ति कर ले जिससे तू सुख की प्राप्ति कर लेगा। जिस प्रकार सुदामा जब कृष्ण के पास उसकी शरण में गया तो उसे सुख की प्राप्ति हुई। इसी प्रकार जो नेक कर्म करता हुआ प्रभु की शरण में जाता है वह सुख पा जाता है व प्रभु के आनन्द को भी प्राप्त कर लेता है।

हे प्रभु, हम अब तेरी शरणागत हो गए हैं। हमारे दिल में ऐसी दिव्य ज्योति जगा दीजिए कि और किसी की रहमत की ज़रूरत ही न रहे। मैं हर ज़र्रे-ज़र्रे में तुझे हंसता-मुस्कराता हुआ देखूं अर्थात् हर चीज़ में तेरा आभास हो। हर तरफ तेरे नज़ारें दिखें। सब जड़-चेतन में हम तेरी ही सत्ता देखें। हमारा मन तेरे ध्यान में ऐसा रम जाए कि हम आनन्द मग्न हो जाएं।

हे मानव, तू इस संसार में आया है तो भक्ति का दीप जला ले। जिस प्रभु की हर पल तेरे ऊपर छाया है, तू उसकी माया को नहीं जानता। उसकी कृपा हर समय तुझ पर बरस रही है। उस प्रभु के नाम का भजन कर ले, ध्यान कर ले और अपने जीवन को सफल बना लें। इस जगत में उस प्रभु के अलावा कोई सच्चा संगी-साथी नहीं है। उस प्रभु के नाम का रस पीकर, प्रभु नाम का फल खा ले। क्षण भर की जीवन नैया पर तू चढ़ कर आया है। ओ३म नाम की पतवार के सहारे इस जीवन रूपी नैया को पार लगा ले। बस प्रभु भक्ति का दीप जला ले।

भक्त प्रभु को ढूंढते-ढूंढते हुए कहता है कि हे पिता, तुम कहां हो। मैंने तुझे मन्दिर में मूर्त में ढूंढा, पर्वत की शिखाओं पर तलाश किया, गंगा-यमुना की धारा में ढूंढा, तू कहीं नहीं मिला। फिर मैं काशी गया, गया भी गया, आकाश-पाताल भी छान मारा। गृहस्थी से, धनी से ऋषि-मुनियों से भी तेरा पता पूछा और फिर निराश हो गया। जब तू कहीं नहीं मिला तो मैं एक ओर बैठ कर अपने आप से पूछने लगा कि बहुत भटक लिया इधर-उधर। अपने अन्दर ही झांक लूं। अंतरात्मा से एक आवाज़ उठी जैसे मेरे ओ३म पिता बोल उठे कि मेरा वास तो तेरी शुद्ध आत्मा में है। जहां प्रेम, विश्वास और श्रद्धा का वातावरण है मेरी वहीं पर पास है। यह ध्वनि सुनते ही मैं प्रभु के ध्यान में बैठा तो मुझे लगा कि मेरे पिता तो मेरे हृदय में ही बैठे हैं बस यही हैं, यहीं हैं।

हम सब पर उस परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा बरस रही है, बस हमें उस प्रभु को अनुभव करता है। वह हमें हर समय हमारे हृदय में वास करता हुआ प्रकाश दे रहा है, ज्ञान दे रहा है, सद-प्रेरणा दे रहा है। वो हमारा सच्चा पिता है, उसने ही इस सारी सृष्टि की रचना की है। वह दिन-रात यज्ञ करता है यानि हर समय दे रहा है, प्राण वो ही तो चला रहा है, दु:ख-दर्द वो ही तो दूर कर रहा है। जल, वायु, अग्नि, अच्छी ऋतुएं, फल-फूल, शाक-अन्न, वनस्पति, सभी पदार्थ दे रहा है। वो ही हमारे दृश्य में सुख व आनन्द की अनुभीति करवा रहा है। हम उस प्रभु को याद करें, धन्यवाद करें और उसे अनुभव करें। वेद मार्ग पर चलते हुए, सब प्राणियों से प्रेम करते हुए राम-कृष्ण का अनुसरण करते हुए उस प्रभु को अनुभव करें।

प्रभु भक्त को कहते हैं कि ऐ मानव, इस संसार को तू ध्यान से देख, समझ व अनुभव कर कि यह संसार कितना सुन्दर है। मेरी हर रचना को तू ध्यान से देख कि कैसे एक बालक बनता है ? कैसे उसके अंग-प्रत्यंग बनते हैं ? कैसे पेड़-पौधे, फूल-फल, जीव बनते हैं ? कैसे यह सूर्य, चांद, सितारे बनते हैं ? कैसे यह संसार का सारा कार्य हो रहा है ? कौन शक्ति दे रहा है, तुझे कार्य करने की ? इस संसार के हर कार्य में मेरी शक्ति को फूलों की सुगन्ध के समान अनुभव कर, बुरी संगत को छोड़ और अच्छी संगत में अपना मन लगा। इस संसार से व सांसारिक वस्तुओं से झूठा मोह हटा व मेरे नाम का सहारा ले ले। ध्यान, भजन व सिमरन करके तो देख सदा आनन्द ही आनन्द पाएगा।

अपने मन को ऐसा बन ले कि मन की हर तरंग के साथ हर श्वास-प्रश्वास के साथ ओ३म नाम का जाप चलता रहे अर्थात् अजपा जाप होने लग जाए। अपने हृदय में समुद्र की गहराई जितना प्रभु का ज्ञान अर्जित कर ले, ताकि अनन्त आकाश के समान तेरे हृदय में अनन्त जाप चलता रहे। मेरे बेमिसाल कार्यों को फूलों के रंग, फलों की मिठास, सूर्य की गर्मी और चांद की शीतलता अथाह समुद्र की जलराशि, ठण्डी पवन और अनन्त आकाश को देख व अनुभव कर कि मैं हर समय केवल तेरे पास और सबके पास ही नहीं बल्कि सबके अन्दर भी हूं और बाहर भी हूं और सब देख-सुन-समझ-जान रहा हूं और तुम्हारे कर्मों का हिसाब रख रहा हूं और फल दे रहा हूं। इसलिए हे मानव, जाप के अभ्यास से शान्ति व आनन्द का अनुभव कर ले।

ओ३म हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्तापिहितं मुखम्।

योऽसावादित्ये पुरुष: सोऽसावहम्। ओ३म खं ब्रह्म।।

यजु. 40/16

परमात्मा उपदेश करता है कि हे मनुष्यों, मैं सब लोकों में सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक हूं व सबसे बड़ा हूं। मेरा निज नाम ओ३म है। जो प्रेम व सत्याचरण से मेरी शरण में आता है मैं उसकी अविद्या का नाश करके उसकी आत्मा में प्रकाश कर देता हूं। उसको योग विज्ञान देकर मोक्ष सुख प्राप्त करता हूं।

ओ३म के ही ध्यान से और ध्यान से ही योग तक, जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक, यह ओ३म ही पहुंचाएगा।

पृष्ठ 4 का शेष-प्रश्नोत्तरी पुनर्जन्म.....

प्रश्न 24. मोक्ष की अवधि पूरी करके आत्मा को मनुष्य शरीर ही मिलता है या जानवर का ?

उत्तर-मनुष्य शरीर ही मिलता है।

प्रश्न 25. क्यों केवल मनुष्य का ही शरीर क्यों मिलता है ? जानवर का क्यों नहीं ?

उत्तर-क्योंकि मोक्ष को भोगने के बाद पुण्य कर्मों को तो भोग लिया और इस मोक्ष की अवधि में पाप कोई किया ही नहीं तो फिर जानवर बनना सम्भव ही नहीं, तो रहा केवल मनुष्य जन्म जो कि कर्म शून्य आत्मा को मिल जाता है।

प्रश्न 26. मोक्ष होने से पुनर्जन्म क्यों बन्द हो जाता है ?

उत्तर-क्योंकि योगाभ्यास आदि साधनों से जितने भी पूर्व कर्म होते हैं (अच्छे या बुरे) वे सब कट जाते हैं। तो ये कर्म ही तो पुनर्जन्म का कारण हैं, कर्म ही न रहे तो पुनर्जन्म क्यों होगा?

प्रश्न 27. पुनर्जन्म से छूटने का उपाय क्या है ?

उत्तर-पुनर्जन्म से छूटने का उपाय है योग मार्ग से मुक्ति या मोक्ष को प्राप्त करना।

प्रश्न 28. पुनर्जन्म में शरीर किस आधार पर मिलता है ?

उत्तर-जिस प्रकार के कर्म आपने एक जन्म में किए हैं उन कर्मों के आधार पर ही आपको पुनर्जन्म में शरीर मिलेगा।

प्रश्न 29. कर्म कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर-मुख्य रूप से कर्मों को तीन भागों में बांटा गया है-सात्विक कर्म, राजसिक कर्म, तामसिक कर्म।

1. सात्विक कर्म-सत्यभाषण, विद्याध्ययन, परोपकार, दान, दया, सेवा आदि।

2. राजसिक कर्म-मिथ्याभाषण, क्रीडा, स्वाद लोलुपता, स्त्री आकर्षण, चलचित्र आदि।

3. तामसिक कर्म-चोरी, जारी, जुआ, ठग्गी, लूटमार, अधिकार हनन आदि।

और जो कर्म इन तीनों से बाहर हैं वे दिव्य कर्म कहलाते हैं, जो कि ऋषियों और योगियों द्वारा किए जाते हैं। इसी कारण उनको हम तीनों गुणों से परे मानते हैं। जो कि ईश्वर के निकट होते हैं और दिव्य कर्म ही करते हैं।

प्रश्न 30. किस प्रकार के कर्म करने से मनुष्य योनि प्राप्त होती है?

उत्तर-सात्विक और राजसिक कर्मों के मिले जुले प्रभाव से मानव देह मिलती है, यदि सात्विक कर्म बहुत कम है और राजसिक अधिक तो मानव शरीर तो प्राप्त होगा परन्तु किसी नीच कुल में, यदि सात्विक गुणों का अनुपात बढ़ता जाएगा तो मानव कुल उच्च ही होता जाएगा। जिसने अत्याधिक सात्विक कर्म किए होंगे वो विद्वान मनुष्य के घर ही जन्म लेगा।

प्रश्न 31. किस प्रकार के कर्म करने से आत्मा जीव जन्तुओं से शरीर को प्राप्त होता है ?

उत्तर-तामसिक और राजसिक कर्मों के फलस्वरूप जानवर शरीर आत्मा को मिलता है। जितना तामसिक कर्म अधिक किए होंगे उतनी ही नीच योनि उस आत्मा को प्राप्त होती चली जाती है। जैसे लड़ाई स्वभाव वाले, मांस खाने वाले को कुत्ता, गीदड़, सिंह, सियार आदि का शरीर मिल सकता है और घोर तामसिक कर्म किए हुए को सांप, नेवला, बिच्छू, कीड़ा, काकरोच, छिपकली आदि। ऐसे ही कर्मों से नीच शरीर मिलते हैं और ये जानवरों के शरीर आत्मा की भोग योनियां हैं।

प्रश्न 32. तो क्या हमें यह पता लग सकता है कि हम पिछले जन्म में क्या थे ? या आगे क्या होंगे ?

उत्तर-नहीं कभी नहीं, सामान्य मनुष्य को यह पता नहीं लग सकता। क्योंकि यह केवल ईश्वर का ही अधिकार है कि हमें हमारे कर्मों के आधार पर शरीर दे। वही सब जानता है।

प्रश्न 33. तो फिर यह किसको पता चल सकता है ?

उत्तर-केवल एक सिद्ध योगी ही यह जान सकता है, योगाभ्यास से उसकी बुद्धि। अत्यन्त तीव्र हो चुकी होती है कि वह ब्रह्माण्ड एवं प्रकृति के महत्त्वपूर्ण रहस्य अपनी योग शक्ति से जान सकता है। उस योगी को बाह्य इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती है। वह अन्त: मन और बुद्धि से सब जान लेता है। उसके सामने भूत और भविष्य दोनों सामने आ खड़े होते हैं।

प्रश्न 34. यह बताएं कि योगी यह सब कैसे जान लेता है ?

उत्तर-अभी यह लेख पुनर्जन्म पर है, यहीं से प्रश्न उत्तर का ये क्रम चला देंगे तो लेख का बहुत ही विस्तार हो जाएगा। इसीलिए हम अगले लेख में यह विषय विस्तार से समझाएंगे कि योगी कैसे अपनी विकसित शक्तियों से सब कुछ जान लेता है। और वे शक्तियां कौन सी हैं ? कैसे प्राप्त होती हैं? इसके लिए अगले लेख की प्रतीक्षा करें।

प्रश्न 35. क्या पुनर्जन्म के कोई प्रमाण हैं ?

उत्तर-हां हैं, जब किसी छोटे बच्चे को देखो तो वह अपनी माता के स्तन से सीधा ही दूध पीने लगता है जो कि उसको सिखाया नहीं जाता है क्योंकि ये उसका अनुभव पिछले जन्म में दूध पीने का रहा है, वर्ना किसी कारण के ऐसा हो नहीं सकता। दूसरा यह कि कभी आप उसको कमरे में अकेला लेटा दो तो वो कभी-कभी हंसता भी है, ये सब पुराने शरीर की बातों को याद करके वो हंसता है पर जैसे-जैसे वो बड़ा होने लगता है तो धीरे-धीरे सब भूल जाता है।

प्रश्न 36. क्या इस पुनर्जन्म को सिद्ध करने के लिए कोई उदाहरण हैं?

उत्तर-हां, जैसे अनेकों समाचार पत्रों में, या टी.वी. में भी आप सुनते हैं कि एक छोटा सा बालक अपने पिछले जन्म की घटनाओं को याद रखे हुए हैं और सारी बातें बताता है जहां जिस गांव में जो पैदा हुआ, जहां उसका घर था, जहां पर वो मरा था और इस जन्म में वह अपने उस गांव में कभी गया तक नहीं था लेकिन फिर भी अपने उस गांव की सारी बातें याद रखे हुए हैं, किसी ने उसको कुछ बताया नहीं, सिखाया नहीं, दूर-दूर तक उसका उस गांव से इस जन्म में कोई नाता नहीं है। फिर भी उसकी गुप्त बुद्धि जो कि सूक्ष्म शरीर का भाग है वह घटनाएं संजोए हुए हैं जाग्रत हो गई और बालक पुराने जन्म की बातें बताने लग पड़ा।

प्रश्न 37. लेकिन ये सब मनघडंत बातें हैं, हम विज्ञान के युग में इसको नहीं मान सकते क्योंकि वैज्ञानिक रूप से ये बातें सिद्ध होती हैं, क्या कोई तार्किक और वैज्ञानिक आधार है इन बातों को सिद्ध करने का ?

उत्तर-आपको किसने कहा कि हम विज्ञान के विरुद्ध इस पुनर्जन्म के सिद्धान्त का दावा करेंगे। ये वैज्ञानिक रूप से सत्य हैं, और आपको ये हम अभी सिद्ध करके दिखाते हैं।

प्रश्न 38. तो सिद्ध कीजिए।

उत्तर-जैसा कि आपको पहले बताया गया है कि मृत्यु केवल स्थूल शरीर की होती है, पर सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ वैसे ही आगे चलता है, तो हर जन्म के कर्मों के संस्कार उस बुद्धि में समाहित होते रहते हैं और कभी किसी जन्म में वो कर्म अपनी वैसी ही परिस्थिति पाने के बाद जागृत हो जाते हैं। इसे उदाहरण से समझें-एक बार एक छोटा सा 6 वर्ष का बालक था, यह घटना हरियाणा के सिरसा के एक गांव की है। जिसमें उसके माता-पिता उसे एक स्कूल में घुमाने लेकर गए जिसमें उसका दाखिला करवाना था और वो बच्चे केवल हरियाणवी या हिन्दी भाषा ही जानता था कोई तीसरी भाषा वो समझ तक नहीं सकता था। लेकिन हुआ कुछ यूं था कि उसे स्कूल की कैमिस्टरी लैब में ले जाया गया और वहां जाते ही उस बच्चे का मुंह लाल हो गया। चेहरे के हावभाव बदल गए और उसने एकदम फर्राटेदार फ्रैंच भाषा बोलनी शुरू कर दी। उसके माता-पिता बहुत डर गए और घबरा गए, तुरंत ही बच्चे को अस्पताल ले जाया गया। जहां पर उसकी बातें सुनकर डाक्टर ने एक दुभाषिए का प्रबन्ध किया जो कि फ्रैंच और हिन्दी जानता था तो उस दुभाषिए ने सारा वृतान्त उस बालक से पूछा तो उस बालक ने बताया कि "मेरा नाम Simon Glaskey है और मैं French Chemist हूं। मेरी मौत मेरी प्रयोगशाला में एक हादसे के कारण (लैब) में हुई थी।"

तो यहां देखने की बात यह है कि इस जन्म में उसे पुरानी घटना के अनुकूल मिलती जुलती परिस्थिति से अपना वह सब याद आया जो उसकी गुप्त बुद्धि में दबा हुआ था। यानि कि वही पुराने जन्म में उसके साथ जो प्रयोगशाला में हुआ, वैसी ही प्रयोगशाला उस दूसरे जन्म में देखने पर उसे सब याद आया तो ऐसे ही बहुत सी उदाहरणों से आप पुनर्जन्म को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध कर सकते हैं।

प्रश्न 39. तो ये घटनाएं भारत में ही क्यों होती हैं ? पूरा विश्व इसको मान्यता क्यों नहीं देता ?

उत्तर-ये घटनाएं पूरे विश्व भर में होती रहती हैं और विश्व इसको मान्यता इसलिए नहीं देता क्योंकि उनको वेदानुसार यौगिक दृष्टि से शरीर का कुछ भी ज्ञान नहीं है। वे केवल मांस और हड्डियों के समूह को शरीर समझते हैं और उनके लिए आत्मा नाम की कोई वस्तु नहीं है। तो ऐसे में उनको न जीवन का ज्ञान है, न मृत्यु का ज्ञान है, न आत्मा का ज्ञान है, न कर्मों का ज्ञान है, न ईश्वरीय व्यवस्था का ज्ञान है। और अगर कोई पुनर्जन्म की कोई घटना उनके सामने आती भी है तो वो इसे मानसिक रोग जानकर उसको Multiple Personality Syndrome का नाम देकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं और उसके कथनानुसार जांच नहीं करवाते हैं।

प्रश्न 40. क्या पुनर्जन्म केवल पृथिवी पर ही होता है या किसी और ग्रह पर भी ?

उत्तर-ये पुनर्जन्म पूरे ब्रह्माण्ड में यत्र तत्र होता है, किसने असंख्य सौरमण्डल हैं, कितनी ही पृथिवीयां हैं तो एक पृथ्वी के जीव मरकर ब्रह्माण्ड में किसी दूसरी पृथिवी के ऊपर किसी न किसी शरीर में भी जन्म ले सकते हैं। ये ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन है।

प्रश्न 41. परन्तु यह बड़ा ही अजीब लगता है कि मान लो कोई हाथी मरकर मच्छर बनता है तो इतने बड़े हाथी की आत्मा मच्छर के शरीर में कैसे घुसेगी ?

उत्तर-यही तो भ्रम है आपका कि आत्मा जो है वो पूरे शरीर में नहीं फैली होती। वो तो हृदय के पास छोटे अनुरूप में होती है। सब जीवों की आत्मा एक सी है। चाहे वो व्हेल मछली हो, चाहे वो एक कीड़ी हो।

मास्टर हरि राम चोपड़ा की 30वीं बरसी मनाई गई

फगवाड़ा 19 जुलाई को यहां स्थानीय आर्य माडल सी. सै. स्कूल में आर्य संस्थानों के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व प्रधान मास्टर हरि राम चोपड़ा जी की 30वीं बरसी का आयोजन स्थानीय आर्य समाज गौशाला रोड द्वारा बड़ी श्रद्धापूर्वक किया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ किया गया, जिसमें श्रीमती सरला चोपड़ा, वरुण चोपड़ा, बलराज खोसला, धर्मवीर नारंग, रेणु चोपड़ा, नीलम चोपड़ा, नैना खोसला, रोहित प्रभाकर ने श्रद्धापूर्वक घी एवं उत्तम सामग्री की आहुतियां यज्ञाग्नि में भेंट कीं। इस अवसर पर स्थानीय विधायक एवं सी. पी. एस. सोम प्रकाश, मेयर अरुण खोसला तथा प्रधान भाजपा मंडल रमेश सचदेवा विशेष तौर पर पधारे। श्री सोम प्रकाश ने कहा कि आर्य समाज ने सामाजिक क्रान्ति लाने में भारी योगदान दिया है। इस अवसर पर स्वर्गीय मास्टर हरि राम चोपड़ा के बारे में बोलते हुए प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ने कहा कि मास्टर जी का जीवन अत्यन्त त्यागमयी रहा तथा उन्होंने क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक उत्थान के लिए भारी योगदान दिया।

महासचिव डा. यश चोपड़ा ने कहा कि मास्टर जी 1957 में हिन्दी आन्दोलन के समय लगभग चार मास तक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वीरेन्द्र जी के साथ जेलों में रहे। उन्होंने अनगिनत ज़रूरतमंद नौजवान युवक-युवतियों की शादियां सहज भाव में सम्पन्न करवाईं तथा जो लोग हिन्दू धर्म छोड़कर इस्लाम में चले गए थे, उन्हें वापस हिन्दू बनाने के लिए उस समय चलाए गए शुद्धि आन्दोलन में भाग लेकर धर्म रक्षा के लिए किए गए शुभ कार्य में हिस्सा लिया। सुशील वर्मा ने ओम नाम जपिए भजन सुनाकर समय बांध दिया। इस अवसर पर शिव हांडा, सतीश बग्गा, नरेश पुरी, डा. जवाहर धीर, कृष्ण बजाज, कीमती शर्मा, तिलक राज, रोहित प्रभाकर, धर्मवीर नारंग, राजीव पाहवा, सुशील वर्मा, प्रदीप आहूजा, बल्लू वालिया, संजीव कैंथ, ओम प्रकाश बिट्टू, जतिन्द्र वरमानी, अश्विनी कुमार हसौड़, मलकीत सिंह रघबात्रा, अशोक खुराना, विपन खुराना, रछपाल भट्टी, राम चन्द्र, संजय कुमार, मिन्टू, दर्शन लाल फोरमैन, बलदेव शर्मा, प्रिंसीपल मीनू महाजन, प्रिंसीपल नीलम पसरीचा, डा. शैली छाबड़ा, चन्द्र रेखा शर्मा, भारती शर्मा, संजय ग्रोवर व रीटा पार्षद, शिव कौड़ा, मनोहर लाल कौड़ा, डा. बी. एस. भाटिया, सुरिन्द्र चोपड़ा, यश चोपड़ा, हैप्पी ब्रोकर, शालू चोपड़ा, सुदेश शर्मा, राजकुमार राजा, राजिन्द्र सोंधी, रणजीत सोंधी, रमण नहरा, डा. रमेश सोबती, डा. विश्व बन्धु सुधीर, जतिन्द्र गुप्ता, सुखदेव सिंह गंढवा (मास्टर), आर. एल. जस्सी (पत्रकार), चन्द्र मोहन गुलाटी (समाज सेवक), डा. विवेक महाजन, रजनीश मधोक एडवोकेट, योगेश प्रभाकर, सुरिन्द्र कलूचा (पत्रकार), अशोक शर्मा पत्रकार, रमेश वर्मा आदि सहित लगभग दो सौ लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में आलू, छोले पूड़ी एवं खीर, चाय का ऋषि प्रसाद भी वितरित किया गया, जिसका सभी ने खूब आनन्द लिया।

-डा. यश चोपड़ा (महासचिव)

वार्षिक निर्वाचन वर्ष 2015-16 हेतु

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल (उ.ख.) को वर्ष 2015-16 हेतु वार्षिक निर्वाचन श्री बच्चीराम आर्य की अध्यक्षता में निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ-

1. प्रधान-श्री बच्चीराम आर्य ग्राम, अरकन्डाईधार।
2. उप-प्रधान-श्री तोताराम आर्य ग्राम, चौन्डला।
3. मंत्री-श्री बासुदेव विमल ग्राम, सेराभल्ला।
4. उपमंत्री-श्री विनोद कुमार ग्राम, कोलखण्डी।
5. कोषाध्यक्ष-श्री जनजीवन राम आर्य ग्राम, पंचराड।
6. लेखनिरीक्षक-श्री धीरज सिंह आर्य ग्राम, पनासतल्ला।
7. पुस्तकाध्यक्ष-श्री प्रदीप कुमार ग्राम, चौन्डला।
8. पुरोहित-श्री चन्द्रप्रकाश आर्य ग्राम, कुणजोली।
9. भजनोपदेशक-श्री बच्चीराम आर्य ग्राम, अरकन्डाई।
10. संरक्षक-सुश्री कुमारी कव्येश्वरी ग्राम कोलादरिया।
11. संगठनमंत्री-श्री बनवारी विमल ग्राम, सेराभल्ला।
12. संगठनमंत्री-श्री राकेश कुमार ग्राम, कोलादरिया।

-वासुदेव बिमल मंत्री
आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल

आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर का स्थापना दिवस मनाया

16 अगस्त 2015 रविवार को आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के प्रांगण में आर्य समाज का 47वां स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान श्री दर्शन कुमार जी ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के साथ किया गया जिसके ब्रह्मा पंडित शक्ति कुमार जी ने वेद मंत्रों का उच्चारण करते हुये सभी यज्ञ प्रेमियों से आहुतियां डलवाई। इसके बाद आर्य समाज शक्ति नगर के बच्चों के अलावा गौरव तलवाड़ तथा अलग अलग अमृतसर की आर्य समाजों से आए बच्चों ने प्रभु भक्ति तथा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की महिमा के भजनों का गुणगान कर सभी का मन मोह लिया।

मुख्य वक्ता पं. महेन्द्र पाल जी आर्य (पूर्व मौलवी महबूब अली) विशेष रूप से पधारे। उन्होंने अपने औजस्वी प्रवचन में कहा कि देव दयानन्द जी ने समाज, देश, संस्कृति और धर्म की उन्नति के कई कार्य किये। नारी जाति के उत्थान के लिये जो कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किये हैं वह शायद ही किसी दूसरे व्यक्ति ने किये हों। महर्षि का प्रेरित जीवन आज भी हमें जीवन में प्रेरणा देता है। स्वामी जी की शिक्षाएं हमें एक अच्छा इंसान बनाने के लिये प्रेरित करती हैं। उन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना पर जोर दिया। उन्होंने सुन्दर शब्दों में वेद और कुरान की व्याख्या की। इस कार्यक्रम में अमृतसर की समस्त डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपल सर्वश्री श्रीमती राजेश शर्मा, नीलम कामरा, नीरा शर्मा, अजय बेरी, परमजीत छाबड़ा, जे.के. लूथरा के अलावा सभी आर्य समाजों से आए अधिकारी एवं अमृतसर के गणमान्य व्यक्ति शामिल हुये और इस कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। शांति पाठ के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

-राकेश मेहरा

स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 15 अगस्त दिन शनिवार को स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बहनों ने बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। बहन बाला जी ने लख-लख है प्रणाम अमर शहीदां नूं भजन सुनाकर देश पर बलिदान होने वाले वीरों को नमन किया। श्रीमती किरन कपूर जी ने जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा वो भारत देश है मेरा भजन गाकर अपने देश के प्राचीन स्वरूप का वर्णन किया। माता जनक आर्या जी ने देश पर बलिदान होने वाले अमर शहीदों के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि किस प्रकार भगत सिंह, राजगुरू, राम प्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, मदन लाल ढींगरा, चन्द्रशेखर आजाद आदि नौजवान युवकों ने अपने देश को आज़ाद करवाने के लिए अपने आपको बलिदान कर दिया। हमें ऐसे शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेकर देश के लिए कार्य करना चाहिए। इस कार्यक्रम में उपस्थिति संतोषजनक रही। **-जनक आर्या मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज**

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज मण्डी हिमाचल प्रदेश में श्रावणी पर्व वेद सप्ताह का आयोजन रक्षा बन्धन 29 अगस्त से 02 सितम्बर 2015 तक बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस पावन अवसर पर प्रख्यात वेद प्रवक्ता डॉ. ओमव्रत आचार्य जी गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़ उत्तर प्रदेश वेद ज्ञान प्रवाहित करेंगे तथा भजनोपदेशक पं. प्रताप सिंह आर्य अपने सुमधुर भजनों से वातावरण को भक्तिमय बनाएंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस पवित्र वेद सप्ताह श्रावणी पर्व पर इष्ट मित्रों तथा सपरिवार भाग लेकर अपने तन-मन को पवित्र करें। कार्यक्रम का समय प्रात: 7.30 से 9.30 बजे तक तथा रात्रि 7.00 से 9.00 बजे तक रहेगा। 02 सितम्बर 2015 को कार्यक्रम का समापन होगा जिसका समय 9.00 से 12.00 बजे तक रहेगा। कार्यक्रम के पश्चात् ऋषि लंगर होगा।

-मन्त्री आर्य समाज मण्डी, हिमाचल प्रदेश)

वेदवाणी

ज्ञानी पुरुष सब ओर ईश्वरकृत अद्भुत बातों को देखता है

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वां अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा।।

-ऋ० १।२५।११

विनय-इस संसार में हम बहुधा आश्चर्यचकित कर देने वाली घटनाएं होते देखा करते हैं। इनका करने वाला कौन है ? वैसे तो प्रतिदिन होने वाली बातों को भी यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें उनमें भी बड़ी अद्भुतता दिखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तु हैं जिनका परिवर्तन हम रोज सायं-प्रातः देखते हैं। नन्हें-से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना, अभी चलते-फिरते, हंसते-खेलते दिखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि वह फिर कभी न जग सकेगा, जीव से जीव पैदा हो जाना-ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं। परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैंकड़ों शहर बर्बाद हो जाते हैं, भूकम्प आते हैं, बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य सितारे की भांति ऊंचा उठ जाता है, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है, तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो। सिद्ध साधु-सन्तों द्वारा हुई चकित कर देने वाली बातों को देखो। ये सब संसार में एक-से-एक बढ़कर अद्भुत हैं। इन सब अद्भुतों का करने वाला कौन है ? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या संघशक्ति है, या कुछ भी नहीं है केवल प्रकृति का खेल है, परन्तु जो "चिकित्वान्" (जानने वाले) हैं उन्हें तो सब ओर इन अद्भुतों का करने वाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दिखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दिखते हैं। इन सब विविध आश्चर्य को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो "गूंगे को वाचाल करने वाले और लंगड़े को भी पहाड़ लंघाने वाले" हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं वे सब प्रभु की ही की हुई थीं, कल जो अद्भुत घटना होने वाली है, कोई तख्ता लटने वाला है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखने वाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते। वे अद्भुत-से-अद्भुत घटना में भी कार्य कारणभाव को देखते हैं।

अतः हे मनुष्यो! संसार के इन आश्चर्यों को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहचानो जो कि संसार को यह अद्भुत नाच नचा रहा है।

-वैदिक विनय से साभार

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल च्यनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।